BHDC-132

बी.ए. कार्यक्रम
(बी.ए.जी.)

सत्रीय कार्य
(जनवरी 2023 और जुलाई 2023 सत्रों के लिए)

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.सी.-132
मध्यकालीन हिंदी कविता

मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली-110068

मध्यकालीन हिंदी कविता
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.सी.–132 / 2023

आपको मध्यकालीन हिंदी कविता पर आधारित पाठ्यक्रम बी.एच.डी.सी.–132 का केवल एक सत्रीय कार्य करना है। इस सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। यह सत्रीय कार्य खंड 1 तथा 2 पर आधारित है।

उद्देश्य : शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप स्वयं उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। यहाँ हमारा तात्पर्य पाठ्यक्रम सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ सीखा और समझा है, उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य आपको मध्यकालीन हिंदी साहित्य तथा उसके प्रमुख कवियों से अवगत कराना है। हिंदी मध्यकालीन कविता के अंतर्गत पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल) और उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल) का साहित्य निहित है। इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने से आप भक्तिकाल और रीतिकाल के प्रमुख कवियों, उनकी कविताओं और उनके काव्य की विशेषताओं से परिचित हो सकेंगे।

इस पाठ्यक्रम पर आधारित सत्रीय कार्य से आप यह जान सकेंगे कि आपको मध्यकालीन हिंदी कविता के संदर्भ में कितनी समझ और दक्षता प्राप्त हुई है। प्रश्नों का उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन करें।

निर्देश : सत्रीय कार्य आरंभ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1). ऐच्छिक पाठ्यक्रमों के लिए कार्यक्रम दर्शिका में दिए गए विस्तृत निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए।

2). अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।

3). बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केंद्र का उल्लेख करें जैसे आगे दिखाया गया है :

अनुक्रमांक : ....

नाम : ....

पता : ....

पाठ्यक्रम का नाम / कोड : ....

सत्रीय कार्य कोड : ....

अध्ययन केन्द्र का नाम / कोड : ....

दिनांक : ....

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

1. सत्रीय कार्य पाठ्यक्रम के खंड 1 तथा 2 पर आधारित है। इसमें तीन भागों के अंतर्गत प्रश्न पूछे गए हैं, जिनका उद्देश्य मध्यकालीन हिंदी साहित्य के प्रमुख कवियों और उनके साहित्य के गहन अध्ययन के संदर्भ में आपकी लेखन क्षमता की जाँच करना है।

2. इस सत्रीय कार्य में कुछ प्रश्न निबंधात्मक हैं। जिनके उत्तर पठित इकाइयों के आधार पर आपको निर्धारित शब्दों में देने हैं। कुछ प्रश्न टिप्पणीपरक हैं। एक प्रश्न में मध्यकालीन हिंदी कविता से कुछ पंक्तियाँ उद्धृत की गई हैं जिनका भावार्थ संदर्भ के साथ प्रस्तुत करना है। इस प्रकार इन प्रश्नों से जहाँ एक ओर आपकी मध्यकालीन हिंदी साहित्य संबंधी समझ विकसित होगी वहीं दूसरी ओर आप मध्यकालीन हिंदी कविता की व्याख्या–विश्लेषण में भी समर्थ हो सकेंगे। उत्तर लिखते हुए भाषागत शुद्धता का विशेष ध्यान रखें।

3. सत्रीय कार्य पूरा करके इसे जाँच के लिए अपने अध्ययन केन्द्र के संयोजक (Coordinator) के पास अवश्य जमा करा दें।

4. सत्रीय कार्य जमा करने की तिथि :

- दिसम्बर माह की सत्रांत परीक्षा के लिए – 31 अक्टूबर
- जून माह की सत्रांत परीक्षा के लिए – 30 अप्रैल

उत्तर देने के लिए निम्नलिखित विधि से तैयारी करेंगे तो आप के लिए लाभप्रद रहेगा।

1. **अध्ययन** : सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाइयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ खास बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढंग से पुनर्व्यवस्थित कीजिए।

2. **अभ्यास** : उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए और प्रत्येक बिंदु पर विस्तार से विचार कीजिए। व्याकरण संबंधी प्रश्नों के उत्तर लिखने से पहले आपने उत्तर पर अच्छी तरह से विचार कर लीजिए। अगर आप बिना समझे पुस्तक या अन्य किसी स्रोत की सहायता से उत्तर देंगे तो इससे आपको कोई लाभ नहीं होगा और सत्रांत परीक्षा में आप ऐसे प्रश्नों का सही उत्तर नहीं दे पाएँगे। निबंधात्मक प्रश्न में आरंभ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरंभिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्ध और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो।
ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हो,
ग) उत्तर सही ढंग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो,
घ) उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबा न हो, और
ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

3. **प्रस्तुति** : जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ तो उसे साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए।

शुभकामनाओं सहित!

नोट : याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

मध्यकालीन हिंदी कविता
(BHDC 132)
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.सी–132
सत्रीय कार्य कोड : बी.एच.डी.सी–132 / टीएमए / 2023
कुल अंक 100

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। 10 अंक के प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में तथा 5 अंक के प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए। शेष प्रश्नों के उत्तर दिए गए निर्देशों के आधार पर दीजिए।

भाग–1

1. भक्तिकाव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए। 10
2. रीतिकालीन परिस्थितियों का परिचय दीजिए। 10
3. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिए : 5 × 3 = 15
   (क) भक्तिकाव्य की काव्य भाषा
   (ख) रीतिकालीन कला और संगीत
   (ग) बल्लभाचार्य

भाग–2

4. रविदास की भक्ति भावना की विशेषताएँ उदाहरण सहित बताइए। 10
5. मीराबाई पर विभिन्न संप्रदायों के प्रभाव का आकलन कीजिए। 10
6. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिए : 5 × 3 = 15
   (क) जायसी का परिवेश
   (ख) रविदास की रचनाएँ
   (ग) सूर सारावली

भाग–3

7. घनानंद की कविता के शिल्प पक्ष पर प्रकाश डालिए। 10
8. भूषण के काव्य की भाषा और शिल्पगत विशेषताओं का विवेचन कीजिए। 10
9. निम्नलिखित पद्यांश की व्याख्या कीजिए : (लगभग 300 शब्दों में) 10

   घन आनंद प्यारे सुजान सुनौ, जिहि भांतिन हौं दुख–सूल सहौं।
   नहिं आवनि औधि न रांवरी आस, इतै पर एक सी बाट चहौं।
   यह देखि अकारन मेरी दसा, कोउ बूझै तो ऊऊर कौन कहौं।
   जिय नेकु विचारि के देहु बताय, हहा पिय दूरितें पांय गहौं।